Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
July to September 2025, E-Journal, Vol. I, Issue LI (51), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

मुरादाबाद जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर विद्यालयीय वातावरण के प्रभाव का अध्ययन

डॉ. मोनिका*

* असिस्टेंट प्रोफेसर (बी. एड. विभाग) अब्दुल रज्ज़ाक पीजी कॉलेज, जोया, अमरोहा (उ.प्र.) भारत

शोध सारांश – बालक की शिक्षा, बुद्धि, मानसिक प्रकिया तथा वातावरण पर निर्भर करती है शिक्षा का उद्देश्य बालक का सर्वांगीण विकास करना होता है अत: शिक्षा के क्षेत्र में सभी छात्रों का सही विकास हो सके यह उपयुक्त शैक्षिक वातावरण पर निर्भर करता है उपयुक्त वातावरण नही मिलने से बालक की अंतनिर्हित शक्तियों का विकास सही से नहीं हो पाता है। बालक की अन्तनिहित शक्तियों के विकास के लिये उपयुक्त वातावरण का मिलना आवश्यक है बालक को जैसा भौतिक वातावरण मिलता है वैसा ही उसको इसकी अंतनिहित शक्तियों का विकास होता है। प्रस्तुत शोध में मुरादाबाद जनपद के माध्यमिक स्तर के सरकारी और स्ववित्त पोषित, शहरी तथा ग्रामीण विद्यालयों के विद्यार्थियों का चयन किया गया है इन विद्यालयों से 320 विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

प्रस्तावना – बालक की शैक्षिक की उपलब्धि पर उसके विद्यालयी वतावरण का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है बालको की उपलब्धियों में उनके शारिरिक एवम मानसिक पक्ष के साथ–साथ विद्यालयी वातावरण का योगदान भी महत्वपूर्ण होता है। मनोविज्ञान के सिद्धांत के अनुसार बालक की अंतनिहित शक्तियों के विकास पर आनुवंशिकता तथा वातावरण दोनों का प्रभाव पड़ता है बालक के व्यक्तित्व का विकास आनुवंशिकता तथा वातावरण के सामंजस्य से होता है परंतु व्यक्तित्व के विकास में आनुवंशिकता से कहीं अधिक प्रभाव वातावरण का पड़ता है यदपि बालक में गुणों के विकास पर परिवार, समुदाय और विद्यालय तीनों के वातावरण का प्रभाव पड़ता है परन्तु विद्यालय का वातावरण बालक के अधिगम के विकास में अपेक्षाकृत अधिक प्रभावी होता है यदि बालक को विद्यालय में अनुकूल वातावरण प्राप्त होता है तो वह सही दिशा में प्रगति कर सकते है विद्यालय का वातावरण ऐसा कारक है जो बालको को प्रभावित करता है और उसके व्यक्तित्व में परिवर्तन लाता है बालक के भविष्य की नींव उसके घर या परिवार में रखी जाती है लेकिन विद्यालय में शिक्षक द्वारा बालक को अनुकूल वातावरण प्रदान कर उस पर विकास के भवन का निर्माण किया जाता है।

वर्तमान समय में भिन्न प्रकार के विद्यालय (अग्रेजी माध्यम, हिंदी माध्यम आवसीय विद्यायल आदि) निजी संस्थानों एवं शासन, प्रशासन द्वारा संचालित किए जा रहे हैं। प्रत्येक माता–पिता विद्यालय से यह अपेक्षा रखता है कि विद्यालय का शैक्षिक एवं समाजिक वातावरण उच्च कोटि का हो ताकि उसमें अध्ययनरत उनके बालकों पर उत्ताम प्रभाव पढ़े जिससे वह उच्च शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त कर सकें और भविष्य में अपने परिवार, समाज एवम कार्यस्थल में समायोजित हो सकें।, विद्यालयी वतावरण की किसी भी विद्यार्थी की भावी उन्नति में महत्वपूर्ण भूमिका होती है। **क्रो** एवं **क्रो** के अनुसार बालकों के व्यक्तित्व पर विद्यालय के अनुभवों का प्रभाव अधिक पड़ता है जिस विद्यालय का वातावरण विद्यार्थियों के अनुकूल होता है वे जीवन में आगे की ओर अग्रसर होते हैं जब विद्यार्थी माध्यमिक स्तर की शिक्षा के उपरान्त घर और विद्यालय के प्रांगण से बाहर निकलता है तो उसके सामने उपलब्धियों को व्यक्त करने की जिम्मेदारी होती है जिसे कुछ बालक अच्छे से निभाते है और कुछ बालक पिछड़ जाते हैं जिसका मूल कारण विद्यालयी वातावरण होता है। विद्यार्थी महत्वकांक्षी तथा जिज्ञासु होते हैं विद्यार्थियों के मस्तिष्क में समय समय पर अनेक प्रश्न एवं जिज्ञासाएं उठती है जिनका समाधान एक अच्छे विद्यालय वातावरण में हो सकता और जिसका सीधा सम्वन्ध विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि से जुड़ा होता है।

शोध समस्या शीर्षक – 'मुरादाबाद जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर विद्यालयीय वातावरण के प्रभाव का अध्ययन'

शोध अध्ययन की आवश्यकता – बालक की शैक्षिक उपलब्धि पर उसके विद्यालयीय वातावरण का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है बालकों की उपलब्धियों को स्थापित करने की क्षमता के विकास में उनके शारीरिक एवं मानसिक पक्ष के साथ–साथ विद्यालयीय वातावरण का योगदान भी महत्वपूर्ण होता है। विद्यालयीय वातवरण के अन्तर्गत विद्यालय का परिवेश, शिक्षक, शिक्षा एक अखंड तत्व है बालक का मन कोरे कागज के समान होता है अध्यापक उसे जैसा स्वरूप देना चाहे, वह वैसा ही बन जाता है बालकों को उचित दिशा प्रदान करने के लिए अध्यापक एवं विद्यालय वातावरण का महत्वपूर्ण योगदान होता है।

अध्ययन के उद्देश्य:

1. माध्यमिक स्तर पर सरकारी और स्ववित्त पोषित विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर विद्यालय वातवारण के प्रभाव का अध्ययन करना।

2. माध्यमिक स्तर पर ग्रामीण और शहरी क्षेत्र के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर विद्यालयी वातवारण के प्रभाव का अध्ययन करना।
3. लिंग भेद के आधार पर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र/छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर विद्यालयी वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पनायें:

1. सरकारी और स्ववित्त पोषित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में विद्यालय वातारवण के कारण सार्थक अंतर होता है।
2. ग्रामीण और शहरी क्षेत्र के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में विद्यालयीय वातावरण के कारण सार्थक अंतर होता है।
3. माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र/छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में विद्यालयीय वातवारण के कारण सार्थक अंतर होता है।

अनुसंधान की विधि – अनुसंधानकर्ता द्वारा शोध कार्य के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है।

अध्ययन हेतु न्यादर्श – प्रस्तुत शोध में मुरादाबाद जनपद के ग्रामीण और शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के सरकारी और स्ववित्त पोषित विद्यालयों के 320 विद्यार्थियों का चयन किया गया है। जिसमे 160 विद्यार्थी (80 छात्र एवं 80 छात्राएं) ग्रामीण क्षेत्र से है तथा 160 विद्यार्थी (80 छात्र एवं 80 छात्राएं) शहरी क्षेत्र से लिये गए है।

शोध उपकरण – इस शोध हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।

आंकड़ों का संकलन – मुरादाबाद जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों से व्यक्तिगत सम्पर्क करके स्वनिर्मित प्रश्नावली के माध्यम से आंकड़ो का संकलन किया गया है।

चर

स्वत्रन्त्र चर–विद्यालयीय वातवारण, **आश्रित चर–** शैक्षिक उपलब्धि

आंकड़ो का विश्लेषण एवं व्याख्या:

1. वितपोषित और स्ववित्त पोषित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान, मानक विचलन व क्रांतिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता
सरकारी विद्यालय	160	54.92	6.40	1.27	सार्थक नहीं
स्ववित्त पोषित विद्यालय	160	53.65	5.85		

प्रयुक्त सारणी में सरकारी और स्ववित्त पोषित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान क्रमश: 54.92 व 53.65 तथा मानक विचलन क्रमश: 6.40 व 5.85 प्राप्त हुआ। इनके मध्य क्रांतिक अनुपात 1.27 है क्रांतिक अनुपात का मान सारणी में 0.05 व 0.01 स्तर के न्यूनतम सार्थक मान क्रमश: 1.97 व 2.60 से कम है क्रांतिक अनुपात का मान 0.05 व 0.1 स्तर पर सार्थक नहीं है अत: हमारी परिकल्पना क्रमांक संख्या 1 'सरकारी और स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों में विद्यालयी वातावरण के कारण सार्थक अन्तर होता है', अस्वीकार की जाती है।

2. ग्रामीण और शहरी क्षेत्र के विद्यालयों में अध्ययन विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान, मानक विचलन, व क्रांतिक अनुपात का विश्लेषण एवमं व्याख्या

	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता
ग्रामीण	160	52.10	6.33	1.12	सार्थक नहीं
शहरी	160	52.72	7.19		

प्रयुक्त तालिका में ग्रामीण एवमं शहरी माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान 52.10 व 52.74 तथा मानक विचलन क्रमश: 6.33 व 7.19 है इनके मध्य क्रांतिक अनुपात का मान 1.12 है प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान सारणी में 0.05 व 0.01 स्तर के न्यूनतम सार्थक मान क्रमश: 1.97 व 2.60 से कम हैं क्रांतिक अनुपात का मान 1.12 क्रमश: 0.05 व 0.01 स्तर पर सार्थक नहीं है। अत: हमारी परिकल्पना क्रमांक संख्या 2 'ग्रामीण और शहरी क्षेत्र के विद्यालयो में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में विद्यालयी वातावरण के कारण सार्थक अंतर होता है', अस्वीकार की जाती है।

3. माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान, मानक विचलन तथा क्रांतिक अनुपात की व्याख्या एवमं विश्लेषण

	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता
छात्र	160	50.13	8.13	1.10	सार्थक नहीं
छात्राएं	160	49.32	7.25		

प्रयुक्त सारणी में माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवम छात्राओं के मध्यमान क्रमश: 50.13 व 49.32 एवमं मानक विचलन क्रमश: 8.13 व 7.25 प्राप्त हुए है इनके मध्य क्रांतिक अनुपात 1.10 है क्रांतिक अनुपात का मान सारणी में 0.05 व 0.01 के स्तर के न्यूनतम सार्थक मान 1.97 व 2.60 से कम है अत: हमारी परिकल्पना क्रमांक संख्या–3 'माध्यमिक विद्यालयो में अध्ययनरत छात्र/छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर विद्यालयी वातावरण के कारण कोई सार्थक अंतर नहीं होता है', अस्वीकार की जाती है।

शोध निष्कर्ष:

1. सरकारी एवम स्ववित्त पोषित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर विद्यालयी वतावरण के कारण सार्थक अंतर नहीं होता है।
2. ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों में अध्यनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर विद्यालयी वातावरण के कारण कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।
3. माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर विद्यालयी वातावरण के कारण कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. आदित्य, प्रमोद कुमार (1994)– 'अनुसूचित जनजाति की छात्र–छात्राओं को के आत्मबोध का शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभावी का अध्ययन', लघु शोध प्रबन्ध, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय

बिलासपुर।

2. गुप्ता, एस. पी. (2002)– 'आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन', शारदा पुस्तक भवन, 11 यूनिवर्सिटी रोड, इलाहाबाद।
3. यादव, शर्मिला सिंह, जे.डी. (2013)– 'राजस्थान के अनुदानित एवं गैर अनुदानित शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में शैक्षिक वातावरण तथा शिक्षक मनोबल का अध्ययन', जर्नल ऑफ इंडियन एजुकेशन, 28(4), पेज नं–37–46, 2016
4. अग्रवाल, स्वेता (2015)– 'उच्च माध्यमिक बालक एवं बालिका विद्यालयी के संगठनात्मक वातवारण का तुलनात्मक अध्ययन', जर्नल ऑफ एजुकेशन साइकोलॉजी, जुलाई 2015
5. राय, पारस नाथ (2013)– अनुसंधान परिचय, अग्रवाल पब्लिशर्स, आगरा।

****